क्या समलैंगिकता अप्राकृतिक है?

हाल के दिनों में यह एक बहस का मुद्दा रहा है कि क्या समलैंगिक सम्बंधों पर से कानूनी प्रतिबंध हटा दिया जाना चाहिए। इस मामले में समस्या यह है कि भारतीय कानून में समलैंगिक सम्बंध दंडनीय अपराध है मगर स्वास्थ्य मंत्रालय को लगता है कि इस वजह से समलैंगिक लोगों को एड्स सम्बंधी उपचार देने में दिक्कत आ रही है।

कई लोगों का मानना है कि समलैंगिक सम्बंध प्रकृति के विपरीत यानी अप्राकृतिक हैं और इन पर प्रतिबंध होना चाहिए। दूसरी ओर, कुछ लोग इस तर्क से असहमत हैं और चाहते हैं कि यह प्रतिबंध हटा लिया जाए। सवाल उठता है कि इस मामले में विज्ञान क्या कहता है।

सबसे पहली समस्या तो यह है कि प्राकृतिक किसे माना जाए। एक तरीका यह हो सकता है कि प्रकृति में देखें कि क्या अन्य प्राणियों में ऐसे समलैंगिक सम्बंध पाए जाते हैं। यदि इस दृष्टि से देखा जाए, तो कनाडा के एक जीव वैज्ञानिक ब्रूस बेजमिल ने करीब 10 साल पहले यह दर्शाया था कि प्राणियों की 470 प्रजातियों में समलैंगिक गतिविधि होती है। इस विषय पर अपनी पुस्तक *'बायोलॉजिकल एक्स्यूबरेंसः एनिमल होमोसेक्चुएलिटी एण्ड नेचुरल डाइवर्सिटी'* में उन्होंने मत व्यक्त किया है कि प्राणि जगत में सेक्स की एक भूमिका प्रजनन की है मगर सेक्स कई अन्य भूमिकाएं भी निभाता है।

इसी वर्ष कैरोलिंस्का इंस्टीट्यूट में इवान्का सेविक द्वारा किए गए एक अध्ययन से यह भी पता चला है कि समलैंगिक व विषमलैंगिक स्त्री-पुरुषों के मस्तिष्क में भी अंतर होते हैं। सेविक व उनके साथी पेर लिंडस्ट्रॉम ने 'सामान्य' व समलैंगिक स्त्री व पुरुषों में मस्तिष्क की संरचना व क्रिया विधि की तुलना के आधार पर बताया है कि किसी संलैंगिक पुरुष का मस्तिष्क किसी 'सामान्य' स्त्री के सदृश होता है जबकि किसी समलैंगिक स्त्री के मस्तिष्क में कुछ चीज़ें ऐसी पाई जाती हैं जो 'सामान्य' पुरुषों के मस्तिष्क में होती हैं।

सबसे पहली बात तो उन्होंने यह देखी कि समलैंगिक स्त्रियों और 'सामान्य' पुरुषों के मस्तिष्क थोड़े असममित होते हैं - उनका दायां अर्धांश बाएं से थोड़ा बड़ा होता है। इसके अलावा उन्होंने यह भी पाया कि दोनों के एमिग्डेला नामक हिस्से में भी अंतर है। एमिग्डेला मस्तिष्क का वह हिस्सा होता है जो भावनाओं से सम्बंधित है। यह देखा गया कि एमिग्डेला और मस्तिष्क के अन्य हिस्सों के बीच जुड़ाव के मामले में समलैंगिक पुरुष व 'सामान्य' स्त्रियों की संरचना एक-सी होती है। इन दोनों में एमिग्डेला से निकलने वाले संदेश दिमाग के उन हिस्सों में जाते हैं जो मूड और चिंता का नियंत्रण करता है।

इस शोध से तो ऐसा लगता है कि समलैंगिकता व्यक्ति के दिमाग की संरचना में ही स्थित होती है। मगर अभी यह नहीं कहा जा सकता कि ये अंतर अनुवांशिक हैं। हो सकता है कि ये किन्हीं संयोगों के कारण पैदा होते हों। मगर ये हैं कुदरती। मगर ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि इन अंतरों का असर इतना निर्णायक है कि व्यक्ति के हाथ में कुछ नहीं है। इससे पहले साइमन लीवे ने बताया था कि 'सामान्य' व समलैंगिक व्यक्तियों के हायपोथेलेमस में भी कुछ फर्क होता है। ***(स्रोत फीचर्स)***